UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 11, अंक : 1, मई 2023

हिन्दी चित्रपट संगीत में हारमोनियम वाद्य का महत्त्वः एक विवेचनात्मक अध्ययन

रोहित कुमार

शोधार्थी, संगीत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सार-संक्षेप

मूक चित्रपट काल में चित्रपट के प्रदर्शन के समय परदे के एक तरफ बैठकर संगीतकारों द्वारा गायन-वादन किया जाता था। तब हारमोनियम और तबला प्रमुख वाद्यों के रूप में प्रयोग किए जाते थे। हिन्दी चित्रपट के आरम्भ से संगीत निर्देशक गीत की धुन बनाने कि लिए हारमोनियम वाद्य की सहायता लेते रहे हैं। विदेशी वाद्य यंत्र होने के पश्चात् भी भारतीय संगीत निर्देशकों के लिए हारमोनियम की सहायता से भारतीय संगीत की झलक प्रदान करने वाली धुन बनाना अधिक सहज होता है। आधुनिक संगीत निर्देशकों द्वारा गिटार और पियानों वाद्य की सहायता से बनाई गई गीत की धुन पाश्चात्य संगीत के अधिक निकट प्रतीत होती है। ऐसे गीतों की धुन में भारतीय स्वर-माधुर्य का अल्पाभास होता है। इन वाद्यों की सहायता से गायक-गायिका को गीत की धुन का अभ्यास करवाना हारमोनियम की अपेक्षा कठिन होता है। इस परिपेक्ष में यदि बात की जाए तो प्रस्तुत शोध-पत्र में सर्वप्रथम हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम वाद्य के सफल प्रयोग की ऐतिहासिकता को दिखाने का प्रयास किया गया है। वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दी चित्रपट संगीत में हारमोनियम के प्रयोग में आई कमी के कारणों का विवरण दिया गया है। संगीत निर्देशकों के लिए हारमोनियम के महत्त्व को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है तथा हिन्दी चित्रपट में गीत की धुन भारतीय संगीत के निकट हो व भारतीय संगीत स्वर-माधुर्य प्रधान बने। शोध-पत्र को लिखने के लिए विवेचनात्मक अनुसंधान विधि को प्रयोग में लाया गया है।

मुख्य शब्द – हारमोनियम, हिन्दी चित्रपट संगीत, संगीत निर्देशक, स्वर-माधुर्य, गीत की धुन

शोध-पत्र

भारतीय चित्रपट में आरम्भ से संगीत को विशेष महत्त्व दिया गया है। वर्ष 1913 से वर्ष 1931 तक भारतीय मूक चित्रपट का काल कहा जाता है। क्योंकि यह चित्रपट संवादरहित, ध्वनिरहित होते थे। मूक चित्रपट के प्रदर्शन के समय दृश्यों को मनोरंजन और रसभाव से परिपूर्ण दर्शाने के लिए परदे के एक तरफ बैठे गायकों तथा वाद्यकारों द्वारा गीत-संगीत का गायन-वादन किया जाता था। तब हारमोनियम और तबला मुख्य वाद्य के रूप में प्रयोग किए जाते थे। मूक चित्रपट काल से सवाक चित्रपट काल के आरम्भिक समय में भी हारमोनियम को मुख्य वाद्य के रूप में संगीतकारों तथा संगीत निर्देशकों के द्वारा प्रयोग किया जाता था।

हारमोनियम वाद्य

हारमोनियम एक विदेशी वाद्य है परन्तु इसके पश्चात् भी हारमोनियम वाद्य भारतीय संगीत में भरपूर मात्रा में प्रयोग किया जाने वाला वाद्य है। 'रिड्स और की-बोर्ड' को आधार बनाकर एलेक्सजेंडर डिबेन ने पैरिस में सन् 1842 ई. को हारमोनियम का निर्माण किया था।[1] हारमोनियम वाद्य गायक-गायिका को गायन करने में बहुत सहायक होता है। हारमोनियम वाद्य की ध्वनि अखण्डित होती है अर्थात् एक बार स्वर पट्टी को दबाकर रखने से व धौंकनी चलाते रहने से हारमोनियम से स्वर निरंतर उत्पन्न होते रहते हैं। हारमोनियम वाद्य को अन्य किसी तंत्री वाद्य की तरह बार-बार स्वर-मिलान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए हारमोनियम वाद्य की इन सब विशेषताओं के कारण लगभग सभी आरम्भिक संगीत निर्देशकों का यह प्रिय वाद्य रहा है। लगभग सभी संगीत निर्देशक चित्रपट के गीत-संगीत की रचना हारमोनियम वाद्य की सहायता से करते थे।

हिन्दी संगीत निर्देशकों द्वारा हारमोनियम का प्रयोग

हिन्दी चित्रपट के आरम्भिक समय सें मूक चित्रपट का सम्पूर्ण संगीत परदे के एक तरफ बैठे संगीतकारों द्वारा गाया-बजाया जाता था। संगीत वाद्यों की अधिकता नहीं होने के कारण मात्र कुछ वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता था। हारमोनियम और तबले का प्रयोग मुख्य वाद्य-यंत्रों के रूप में किया जाता था। 'भारतीय चित्रपट में पहली बोलती चित्रपट 'आलमआरा' सन् 1931 ई. में प्रदर्शित की गई थी। हिन्दी चित्रपट का पहला हिन्दुस्तानी गीत इसी चित्रपट में था, जिसे गाया था फिल्म के अभिनेता वाजिर मुहम्मद खान ने।' एक फकीर की भूमिका में डब्ल्यू. एम. खान ने गाया, 'दे दे खुदा के नाम पे प्यारे, ताकत है गर देने की,' मात्र एक तबला और हारमोनियम के साथ सृजित इस गीत को गाया लेकिन इसका रेकॉर्ड नहीं बना था।''[2]

हारमोनियम वाद्य की सहायता से संगीत निर्देशक शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत की धुन को सहजता से बनाते थे। शास्त्रीय संगीत का ज्ञान हिन्दी चित्रपट संगीत निर्देशक बचपन से ही प्राप्त कर हिन्दी चित्रपट

जगत में आते थे। संगीत निर्देशक गुलाम हैदर, नौशाद अली, हुसनलाल-भगतराम, रोशन लाल नागरथ ऐसे अनेक संगीत निर्देशक रहे हैं, जिन्होंने शास्त्रीय संगीत सीखा और साथ ही हारमोनियम वादन करना भी सीखा। इसलिए लगभग सभी संगीत निर्देशक हारमोनियम वाद्य की सहायता से गीत-संगीत की रचना करते थे। नौशाद अली जी के गीतों में हमें शास्त्रीय संगीत का साफ आभास होता है, जैसे बैजू बावरा, पाकिजा, मुगल-ए-आजम चित्रपट के गीत। इन सभी गीतों की रचना नौशाद अली जी अपने विशेष हारमोनियम की सहायता से करते थे।

(नौशाद अली जी गीत की रचना करते हुए)

संगीत निर्देशक हारमोनियम वाद्य पर शास्त्रीय संगीत आधारित धुन को बनाकर कुछ ही मिनट के गीत में पूर्ण राग का स्वरूप प्रस्तुत कर देते थे। इसके पश्चात् गीत की धुन गायक-गायिका को सीखाने के लिए भी हारमोनियम का प्रयोग करते थे।

(नौशाद अली जी गीत की धुन को सीखाते हुए)

महान तबला वादक अल्ला रक्खाँ कुरैशी जी तथा संतूर वादक शिवकुमार शर्मा जी व अनेक ऐसे संगीतकार जो अन्य वाद्य बजाने में निपुण थे, वह हारमोनियम वाद्य की सहायता से गीत की धुन बनाते हुए देखे जा सकते हैं।[3]

(उस्ताद अल्ला रक्खाँ जी हारमोनियम बजाते हुए)

'रसिक बलमा' के गीत के बारे में बड़े गुलाम अली खाँ ने तारीफ करते हुए कहा कि–''फिल्म वाले भी कमाल का संगीत बना देते हैं। एक राग का निचौड़ लगभग चार मिनट के गीत में आ जाता है।''[4] यह गीत संगीत-निर्देशक शंकर-जयकिशन द्वारा बनाया गया था। शंकर-जयकिशन जी भी अपने गीत की रचना हारमोनियम वाद्य की सहायता से किया करते थे।

(शंकर-जयकिशन जी गीत की धुन सीखाते हुए)

संगीत निर्देशकों के लिए गीत की धुन बनाना और उसे दृश्य के अनुसार अर्थात् चित्रपट में परिस्थिति के अनुसार व्यवस्थित करना एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। संगीत निर्देशक रात को नींद खुलने पर यदि चित्रपट परिस्थिति के अनुसार कोई धुन मस्तिष्क में आती थी तो तब भी हारमोनियम वाद्य पर वह धुन बजाने लगते थे। ऐसे ही बहुत सी लोकप्रिय धुनों का निर्माण हुआ है। ''थक-हारकर नौशाद जी चारपाई पर जा लेटे। सपने में देखा कि हारमोनियम बजा रहे हैं और एक धुन की छाया-सी गुजर रही है। आँख खुली तो उसी छाया को लेकर आधी रात में

हारमोनियम लेकर बैठ गए और उसी धुन को हूबहू उतार दिया। परिणाम था 'आवाज दे कहाँ है' गीत।''[5] हारमोनियम वाद्य को कभी-भी बिना किसी परेशानी के बिना समय गवाँए बजाया जा सकता है। हारमोनियम वाद्य की इस विशेषता से प्रभावित होकर लगभग सभी संगीत निर्देशकों ने हारमोनियम वाद्य को विशेष महत्त्व प्रदान किया तथा हारमोनियम वाद्य का भरपूर प्रयोग किया। ''संगीत निर्देशक मदनमोहन जी कई बार आधी रात्रि में उठ जाते थे और उसी समय हारमोनियम पर धुन बनानी शुरू कर देते थे जो भी उस समय उनके दिमाग में चलती रहती थी।''[6]

गीताकार गुलजार जी के शब्दों में–''वे (मदनमोहन) जब हारमोनियम पर धुन बनाते थे तो साथ ही गुनगुनाते रहते थे।''[7]

हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम वाद्य का सफल प्रयोग

हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम का भरपूर प्रयोग किया गया है। बहुत से प्रसिद्ध गीत है जिनमें हारमोनियम का प्रयोग किया गया है, का अध्ययन करने के पश्चात् ज्ञात होता है कि लगभग सभी गीतों में एक चीज सामान्य प्रतीत होती है कि गीत, भजन या कव्वाली का आरंभ हारमोनियम वाद्य से ही होता है। कई ऐसे गीत और कव्वाली प्रसिद्ध हुए हैं जिनमें आरंभ में हारमोनियम पर धुन को बजाया गया और वो धुन भी बहुत प्रसिद्ध हुई। गीत के बीच-बीच में भी संगीत को भरने के लिए हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है। आरंभिक चित्रपट के प्रत्येक गीत, जिसमें हारमोनियम का प्रयोग हुआ है उसमें नायक या नायिका को हारमोनियम बजाते हुए दिखाया जाता था। गले में हारमोनियम लटका कर नायक या नायिका गीत गाते थे और हारमोनियम बजाते थे। सड़क किनारे गाकर और संगीत से मनोरंजन करने वाले भी चित्रपट के गीत में हारमोनियम वाद्य बजाते हुए दिखाए जाते थे। कुछ प्रसिद्ध गीत जिनमें हारमोनियम का प्रयोग किया गया है उनके बारे में जानकारी निम्नलिखित प्रकार से है–

गीत	–	चुप-चुप खड़े हो
चित्रपट	–	बड़ी बहन (1949)
संगीतकार	–	हुसनलाल-भगतराम
हारमोनियम वादक	–	भगतराम[8]

इस गीत में सहायक अभिनेत्री गले में हारमोनियम को लटकाए हारमोनियम बजाती है। गीत का आरंभ हारमोनियम की आवाज से ही होती है। ढ़फ और हारमोनियम प्रमुख वाद्य दिखाए गए है। यह अभिनेत्री गा-बजाकर अपना गुजारा करने वाली दिखाई गई है।

गीत	–	लेके पहला-पहला प्यार
चित्रपट	–	सी.आई.डी. (1956)
संगीतकार	–	ओंकार प्रसाद नय्यर
हारमोनियम वादक	–	बाबू सिंह पवार[9]

इस गीत का आरंभ भी हारमोनियम की आवाज और दृश्य से होता है। सड़कों पर नाच-गाकर गुजारा करने वाले लड़का-लड़की इस गीत में दिखाए गए है। गले में हारमोनियम लटका कर बजाते हुए दिखाया गया है। नायक नाराज हुई नायिका को गीत के माध्यम से मनाने का प्रयत्न करता है। इस गीत के प्रत्येक Interlude में हारमोनियम को बजाया गया है।

गीत	–	कजरा मुहब्बत वाला
चित्रपट	–	किस्मत (1968)
संगीतकार	–	ओंकार प्रसाद नय्यर
हारमोनियम वादक	–	बाबू सिंह पवार[10]

मंच पर गीत का आरंभ हारमोनियम वाद्य की बहुत प्रसिद्ध हुई धुन से होता है। मंच पर कलाकार गले में हारमोनियम लटकाए और बजाते हुए दिखाया गया है। इस गीत के प्रत्येक भाग में हारमोनियम का प्रयोग संगीत भरने के लिए किया गया है।

गीत	–	दीवाने हैं दीवानों को
चित्रपट	–	जंजीर (1973)
संगीतकार	–	कल्याण जी - आनंद जी
हारमोनियम वादक	–	उस्ताद भूरे खां[11]

इस गीत की शुरूआत भी हारमोनियम वाद्य से होती है। एक कलाकार लड़का गले में हारमोनियम डाल कर गाता और बजाता है और साथ में दूसरा कलाकार ढोलक को बजाता है। इस गीत के प्रत्येक अंतराल में हारमोनियम का बहुत अधिक प्रयोग किया गया है।

गीत	–	दिल की तन्हाई को
चित्रपट	–	चाहत (1996)
संगीतकार	–	अनु मलिक
हारमोनियम वादक	–	उस्ताद भूरे खां[12]

इस गीत की आरंभिक ध्वनि भी हारमोनियम की होती है। नायक (शाहरूख खान) गले में हारमोनियम लटका कर हारमोनियम बजाता है।

गीत	–	होले होले
चित्रपट	–	रब ने बना दी जोड़ी (2008)
संगीतकार	–	सलीम सुलेमान

इस गीत के आरंभ में भी हारमोनियम की आवाज आती है लेकिन पूरे गीत में हारमोनियम एक बार भी दिखाया नहीं जाता है। संगीत भरने के लिए भी हारमोनियम का भरपूर प्रयोग किया गया है। प्रत्येक अंतराल में हारमोनियम बजाया हुआ सुनाई देता है।

गीत	–	बंजारा
चित्रपट	–	एक विलेन
संगीतकार	–	मिथुन

इस गीत में हारमोनियम का प्रयोग Interlude देने के लिए किया गया है। इस गीत के प्रथम Interlude में 20 सैकेंड (1:30 - 1:50 मिनट) का बहुत ही मधुर हारमोनियम वादन किया है।

गीत	–	डांस का भूत
चित्रपट	–	ब्रह्मास्त्रः पहला भाग - शिवा (2022)
संगीतकार	–	प्रीतम चक्रबोर्ती

इस गीत के प्रथम Interlude में हारमोनियम का प्रयोग उत्साह वर्धन और नाचने का रंग भरने के लिए किया गया है। हारमोनियम, ढोलक और ढोल का प्रयोग इस गीत में विशेष उमंग भर देता है। इनके अलावा अनेक गीतो में हारमोनियम दिखाया भी गया है जैसे–दिल के टुकड़े-टुकड़े कर के, आदमी मुसाफिर है, ये माना मेरी जां, कोई शहरी बाबू, आज हमारे दिल में।

हिन्दी चित्रपट संगीत में हारमोनियम की वर्तमान स्थिति

हिन्दी चित्रपट के संगीत निर्देशकों के लिए हारमोनियम एक बहुत ही सहायक व महत्त्वपूर्ण वाद्य सिद्ध हुआ है। आज के हिन्दी चित्रपट संगीत पर पाश्चात्य संगीत सर चढ़कर बोल रहा है। आरंभिक संगीत निर्देशक गीत-संगीत की रचना करने में जहाँ ज्यादातर हारमोनियम वाद्य का प्रयोग करते थे, अब वर्तमान में ज्यादातर संगीत निर्देशक गिटार और पियानों का प्रयोग करते हैं। गिटार और पियानों दोनों वाद्य संवाद व्यवस्था पर आधारित होते हैं। हालांकि हारमोनियम वाद्य भी संवाद व्यवस्था पर आधारित वाद्य है, लेकिन हारमोनियम की लगातार बनी रहने वाली आवाज इसे पियानों वाद्य को अलग करती है तथा हारमोनियम वाद्य की ध्वनि मनुष्य की आवाज से मिल जाती है।

अब वर्तमान में हिन्दी चित्रपट के नायक के हाथ में हारमोनियम की जगह गिटार वाद्य ने ले ली है। पहले के दशक के गीतों में हारमोनियम का प्रयोग गीत के दृश्यों में किया जाता था। नायक/नायिका गले में या हारमोनियम समक्ष रख कर बजाते हुए दिखाए जाते थे। परन्तु अब यह बहुत कम देखने को मिलता है। नायक द्वारा गीत में गिटार वादन करते हुए दिखाना आधुनिक तथा पाश्चात्य संगीत की देन माना जा सकता है। वर्तमान समय में हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम वाद्य का प्रयोग बहुत से गीतों में सुनने को प्राप्त होता है। यदि बात कव्वाली की हो तब हारमोनियम वाद्य अनिवार्य हो जाता है। साल 2015 में प्रदर्शित चित्रपट बजरंगी भाईजान में 'भर दो झोली मेरी' शीर्षक वाली कव्वाली में हारमोनियम सुनने व देखने को प्राप्त होता है। साल 2021 में प्रदर्शित चित्रपट तूफान के पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड) संगीत में हारमोनियम वाद्य का भरपूर प्रयोग किया गया है।

वर्तमान हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम का प्रयोग देखने व सुनने को बहुत कम प्राप्त होता है, परन्तु कुछ संगीतकारों ने हारमोनियम को अपने संगीत में जीवित रखा हुआ है। सलीम-सुलेमान, अनु मलिक, प्रीतम चक्रबोर्ती, शंकर महादेवन आदि प्रमुख संगीतकारों ने हारमोनियम बाद्य का वर्तमान दशक में बहुत सुन्दर प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

हारमोनियम वाद्य भारत में बहुत प्रसिद्ध वाद्य है। यह अपनी विशेषताओं के कारण इतना प्रसिद्ध हुआ है। भारतीय संगीत निर्देशकों के लिए हारमोनियम पर धुन बनाना बहुत ही सहज है। लगातार बनी रहने वाली ध्वनि और बार-बार ट्यून (स्वर मिलान) न करने की विशेषताओं के कारण यह वाद्य संगीत निर्माण में प्रमुख वाद्य बन गया है। वर्तमान हिन्दी चित्रपट में नायक-नायिका का चरित्र देसीपन में दिखाने के लिए हारमोनियम का प्रयोग होता है। यदि नायक नायिका का आधुनिक चरित्र दिखाना हो तब गिटार वाद्य का प्रयोग किया जाता है। कुछ विशेष गायन विद्या जैसे गजल, कव्वाली में हारमोनियम का प्रयोग वर्तमान में भी अनिवार्य है। हारमोनियम जिस भी गीत में प्रयोग किया जाता है तो लगभग प्रत्येक गीत के आरंभ में ही इसकी ध्वनि सुनने को प्राप्त हो जाती है। हारमोनियम भारत के देसीपन से जुड़ा वाद्य बन गया है। इसी कारण यह भारतीय चित्रपट में भी बहुत महत्त्वपूर्ण वाद्य बन गया है। वर्तमान समय में हिन्दी चित्रपट में हारमोनियम के प्रयोग में कमी आने का कारण पाश्चात्य संगीत भी माना जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, विनय कुमार, 2015, हारमोनियम विविध आयाम, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, 4649-बी./21, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या - 28
2. राग, पंकज, 2017, धुनों की यात्रा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेता जी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 11
3. https://www-instagram-com/reel/CoSuklZA&q1/\igshid¾NDk5N2NlZjQ¾
4. जौहरी, सीमा, 2022, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार, राधा पब्लिकेशन्स 4378/4-बी,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 19
5. Opcit, राग, पंकज, पृष्ठ संख्या - 133
6. लोहट, सुशील कुमार, 2014, चित्रपट संगीत के बहुआयामी संगीतकार मदनमोहन, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5-21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, पृष्ठ संख्या - 22
7. वही, पृष्ठ संख्या - 254
8. https://youtu.be/-btaTuMDqbE
9. Opcit, मिश्र, विनय कुमार, पृष्ठ संख्या - 141
10. वही, पृष्ठ संख्या - 141
11. वही, पृष्ठ संख्या - 142
12. वही, पृष्ठ संख्या - 143